भारत में प्रेम एक साहसिक विद्रोह है!

कविता

पुरानी दुनिया के अंधेरे में प्रेम करने वालों का आखेट किया जा रहा है। जाति, धर्म और परम्परा के स्वयंभू ठेकेदार शिकारियों के समान प्रेमियों का पीछा कर रहे हैं। वे उनका वध कर रहे हैं और उनके चेहरों पर वही गर्वीली मुद्रा है जो शिकार के बाद, बाघ या शेर की लाश पर बूट रखे, बन्दूक थाम्हे, हैट लगाये, मूंछ ऐंठते, फोटो खिंचाते पुराने जमाने के शिकारियों के चेहरों पर अंकित हुआ करती थी।

जाति और धर्म का बंधन तोड़ कर प्रेम करने वालों को इक्कीसवीं सदी के "पंच परमेश्वरों" ने आदर्श "बलिपशु" घोषित कर दिया है। परम्परा-रक्षा का यज्ञ जोर-शोर से जारी है। 'नमो अंधकारम्' का मन्त्र-जाप आकाश गुंजा रहा है। प्रेम से "अशुद्ध" आत्माओं की शुद्धि के लिए नरबलि का अनुष्ठान किया जा रहा है। भूमण्डलीकृत विश्व के पिछवाड़े के अंधेरे कोनों में कहीं बुर्का न पहनने वाली स्त्रियों पर तेजाब फेंका जा रहा है, कहीं स्त्री को मृत पति के साथ चिता पर जीवित भूना जा रहा है, कहीं गला रेत कर तंदूर में पकाया जा रहा है, कहीं सरेआम निर्वस्त्र घुमाया जा रहा है, तो कहीं प्रेम करने वालों को पंचायत बैठाकर फांसी दी जा रही है या सड़क पर गोली से उड़ाया जा रहा है।

परम्परा और व्यवस्था के रखवाले प्रेम करने वालों से हमेशा से डरते रहे हैं और उनके लिए तरह-तरह की सज़ाएं तजवीज करते रहे हैं। पर अब, बदलते समय की तेज रफ्तार ने मंथर गति से सदियों से रेंगते आ रहे भारतीय समाज के युवाओं के एक हिस्से में रुढ़ियों और अन्यायपूर्ण परम्पराओं के विरुद्ध विद्रोह की जो भावना उत्पन्न की है, उससे पुरानी व्यवस्थाओं के रखवाले एकदम बौखला उठे हैं। प्रेमियों को, परम्पराभंजक स्त्रियों को और जाति-व्यवस्था-विरोधियों, विशेषकर दलितों को क्रूरतम सज़ाएं दी जा रही हैं।

बर्बर "पंच-परमेश्वर" शायद यह नहीं जानते कि नृशंसतम अत्याचारों से भी शान्त होने के बजाए विद्रोहों की ज्वाला और अधिक भड़क जाया करती है।

प्राचीन भारतीय सभ्यता-संस्कृति गौरव की दुहाई देने वालों को चाहिए कि प्रेम की सभी पुरातन कथाओं को जलाकर राख कर दें और ऋषियों-मुनियों-देवताओं-राजाओं की उन सभी व्याभिचार-गाथाओं, रास-लीलाओं, गणिकाओं-वारांगनाओं के वृतान्तों, नियोग-प्रथा और रनिवासों के अंधेरों, स्त्री पर दांव लगाने वाली द्यूत क्रीड़ाओं, भरे दरबार के चीरहरणों, कंचुल-नृत्यों और अनन्त विलासिता की स्मृतियों को उनकी "धर्मसम्मत-न्यायसम्मत" व्याख्याओं सहित कालपात्र में सुरक्षित कर लें। वैसे भी, हमारे समाज में झीने पर्दे के पीछे होने वाले

सभी अनाचार-व्याभिचार स्वीकार्य होते हैं। अस्वीकार्य है तो सिर्फ वह प्रेम जो जाति-धर्म के बन्धनों को नहीं मानता। भारत में आज भी प्रेम करना एक कठिन, दुर्दम्य साहस की मांग करता है। यह कबूतरदिल लोगों का काम नहीं। क्योंकि जो प्रेम करेंगे, वे मारे जायेंगे...!!

☆

पिछले दिनों पश्चिमी उत्तर प्रदेश के शामली तहसील के अलीपुर गांव की पंचायत में जुटे बड़े-बुजुर्गों ने 17 वर्षीय विशाल और 15 वर्षीय निधि उर्फ सोनू को फांसी की सजा सुनाई। गांव वालों की मदद से सजा को अंजाम दिया विशाल के भाई और सोनू के पिता ने। इन दो किशोरों का अपराध था कि जाति बिरादरी और गांव की मर्यादा को तोड़कर उन्होंने प्यार किया था। विशाल ब्राह्मण था जबकि सोनू जाट परिवार की लड़की थी।

उल्लेखनीय है कि अकेले मुजफ्फरनगर जिले में हाल के वर्षों में इस तरह की करीब दर्जन भर घटनाएं घट चुकी हैं। पहली घटना 80 के दशक में थाना भवन क्षेत्र में घटी। दूसरी घटना अगस्त 1993 में कांधला के खंदरावली गांव में घटी, जब भरी पंचायत में सतीश और उसकी प्रेमिका संगीता की गर्दन काटकर हत्या कर दी गयी। तीसरी घटना अभी हाल ही में नगर कोतवाली के खालापार क्षेत्र में हुई जहां एक मुस्लिम प्रेमी जोड़े की हत्या उन्हीं के बस्ती के लोगों ने कर दी। चौथी घटना अलीपुर कांड के बाद की है। हुकारी गांव की एक लड़की को गांव के तीन लड़कों से प्रेम के आरोप में फांसी की सजा सुनाई गयी लड़कों को तो सिर्फ अर्थदण्ड वसूल कर छोड़ दिया गया लेकिन लड़की को पत्थर-डंडे बरसा कर मार डाला गया।

प्रेम-विरोधी इस बर्बर स्वेच्छाचारी मुहिम के पीछे सहस्त्राब्दियों पुरानी निरंकुश मानवद्रोही जाति-व्यवस्था, स्त्री-विरोधी पुरुष-वर्चस्ववाद, किसानी समाज के जनवाद-विरोधी मूल्य और "तालिबानी" हिन्दुत्व के मूल्य इस कदर गुंथे-बुने हैं कि उनके धागों-रेशों को अलगा पाना असंभवप्रय लगता है।

हमारे देश की पूंजीवादी चुनावी राजनीति किस तरह गांव के स्थानीय चौधरियों द्वारा पोषित-संरक्षित पुरातन-बर्बर निरंकुशता से जुड़ी हुई है, इसका प्रमाण इस तथ्य से मिल जाता है कि मुजफ्फरनगर में साम्प्रदायिक तनाव की खबरें मिलते ही संसद में गरज पड़ने वाले मुलायम सिंह यादव इस बात पर कुछ नहीं बोले। 'जाटलैण्ड' के अमेरिका रिटर्न छोटे चौधरी, अजित सिंह भी चुप्पी साधे रहे। इस मसले पर कुछ भी बोलना पंचायतों के चौधरियों का कोपभाजन बनना होता और अपना वोटबैंक हाथ से निकलने का जोखिम भला सामाजिक न्याय और किसान हितों के ये मसीहा लोग क्यों उठाते? मुजफ्फरनगर धनी किसानों के सिरमौर नेता महेन्द्र सिंह टिकैत का गृहजनपद है। खैर, वे तो स्वयं ही जाति-बिरादरी और पुरानी परम्पराओं के जबर्दस्त पैरोकार हैं। वे गांवों की उन पुरानी पंचायतों के प्रबल समर्थक हैं और ये पंचायतें ही उनका आधार हैं। पुरानी

व्यवस्थाओं और रीति-रिवाज़ों की दुहाई देना इन पंचायतों की सबसे बड़ी पूंजी है।

सोचने की बात यह भी है कि विशाल और सोनू को फांसी चढ़ाने की घटना देश के किसी पिछड़े इलाके में नहीं बल्कि उत्तर प्रदेश के सबसे सम्पन्न जनपद में घटी है जो प्रति व्यक्ति औसत आय के मामले में पंजाब से भी आगे है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण के विस्तार में गये बग़ैर, यहां सोचने के लिए मात्र इस मुद्दे को रेखांकित कर देना ज़रूरी है कि पूंजीवादी विकासजन्य समृद्धि के साथ ही सामाजिक जीवन में जनवाद, आज़ादी, मानववाद और वैयक्तिकता के मूल्यों की स्थापना हर हाल में अपरिहार्य नहीं होती। भारतीय समाज का पूंजीवाद सुधार-पुनर्जागरण क्रान्ति की नैसर्गिक प्रक्रिया से नहीं बल्कि औपनिवेशिक सामाजिक संरचना की कोख से जन्मा है और साम्राज्यवाद की सदी के अंतिम दशकों में अत्यन्त मंथर प्रक्रिया से पला-बढ़ा है। यह जनवाद के सकरात्मक मूल्यों से सर्वथा रिक्त है और प्राक्-पूंजीवादी समाज के तमाम निरंकुश स्वेच्छाचारी मूल्यों-मान्यताओं को इसने ज्यों का त्यों अपना लिया है। दूसरी ओर वित्तीय पूंजी के विश्वव्यापी वर्चस्व के दौर में फासीवाद सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों से भी इनका पूरा सहमेल है। यह एक व्यापक आम पृष्ठभूमि है जो महानगरीय संस्कृति की निरंकुश स्वेच्छाचारिता के पीछे भी मौजूद है और कुलकों-फार्मरों के वर्चस्व वाले मुजफ्फरनगर में प्रेमी जोड़े की हत्या जैसी घटना के पीछे भी।

•

किसानी अर्थव्यवस्था वाले ग्रामीण इलाकों में जो बर्बर निरंकुश स्वेच्छाचारी जातिवादी और नारी-विरोधी मूल्य सदियों से जड़े जमाये रहे हैं, उन्हें पूंजी की सत्ता ने एक नया आधार और नई मजबूती दी है। हालांकि इस सच्चाई के इस दूसरे पहलू की भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि दलितों और स्त्रियों में तथा विशेषकर युवा पीढ़ी में विद्रोह की भावना भी इधर लगातार मुखर और बलवती हुई है।

भू-स्वामित्व निजी स्वामित्व का पुरातनतम रूप है और एशियाई समाज में – विशेषकर भारत में भूस्वामित्व की व्यवस्था में बदलाव की गति अतिमंथर रही है इसीलिए उत्तर भारत के गांवों में पूंजी के वर्चस्व के साथ आई नई निरंकुशता के साथ ही पुरानी निरंकुशता के सभी रूप एकदम घुल-मिल गये हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश और हरियाणा के किसानी समाज में रूढ़ियों-परम्पराओं के प्रति जो आग्रह मौजूद है, वह रूस के मुझिकों और कजाकिस्तान के कज्जाकों से किसी मायने में कम नहीं है। सिख धर्म और धर्म सुधार आन्दोलनों के प्रभाव में पंजाब का किसान समाज जातिगत कट्टरता से एक हद तक (एक हद तक ही) मुक्त हुआ, पर राष्ट्रीय आन्दोलन, आर्य समाज और स्वामी रामतीर्थ आदि के प्रभाव के बावजूद, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जाति-बिरादरी की रूढ़िगत कट्टरता में कोई फर्क नहीं पड़ा। जाटों जैसी किसान जातियां अतीत में भले ही शूद्र मानी जाती रही हों, पूंजी की ताकत से लैस होकर आज वे अपनी "जातिगत शुद्धता" के प्रति सवर्णों से भी अधिक आग्रही दीखती हैं और दलित-उत्पीड़न के मामले में भी वे देश के किसी भी हिस्से के सवर्णों से पीछे नहीं हैं। यही नहीं, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गुज्जर और मुसलमान भी जातिगत संकीर्णता के इन मूल्यों को आत्मसात् किये हुए दीखते हैं।

सोचने की बात यह भी है कि भूमण्डलीकरण का विरोध करते हुए "स्वदेशी" का नारा बुलन्द करने वाले किस्सिम-किस्सिम के गांधीवादी, सर्वोदयी, समाजवादी और कुछ दिग्भ्रमित वामपंथी गांवों में जिस परम्परागत पंचायती व्यवस्था को पुनर्जीवित करने की बात कर रहे हैं, उसी पंचायती व्यवस्था के सूत्रधार कहीं सोनू और विशाल को फांसी की सज़ा सुना रहे हैं तो कहीं किसी दलित स्त्री को निर्वस्त्र करके गांव की सड़कों पर घुमा रहे हैं। बर्बर जातिवादी मूल्यों पर आधारित और ग्रामीण नवधनिकों (जिनमें जाट, कुर्मी, यादव, मराठा, रेड्डी, कम्मा आदि मध्य जातियों के धनी किसान सवर्ण भूस्वामियों से कम प्रभावी नहीं है) के वर्चस्व वाली ये पंचायतें "स्वदेशी राज" की कौन-सी बानगी पेश करेंगी, यह बताने की ज़रूरत नहीं है! इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि चाहे वाजपेयी की केन्द्र सरकार हो या राजस्थान-मध्यप्रदेश की कांग्रेसी सरकारें, सभी पंचायती राज और स्थानीय स्वशासन के नाम पर गांवों में इन्हीं बर्बर-निरंकुश "पंच-परमेश्वरों" की सत्ता को मजबूत बनाने का काम कर रही हैं।

•

यह महज इत्तफ़ाक नहीं है कि इधर कुछ दिनों से, देश के विभिन्न हिस्सों से जाति-धर्म का बंधन तोड़कर प्रेम करने के "अपराध" और "दण्ड" की खबरें लगातार समाचार-पत्रों की सुर्खियां बन रही हैं। मुजफ्फरनगर की ही एक और घटना अभी कुछ दिनों पहले अखबारों में छपी थी। सिसौनिया गांव की 17 वर्षीय सीमा और उन्नीस वर्षीय अमित ने अन्तर्जातीय प्रेम विवाह कर लिया। सीमा सैनी जाति की थी और अमित बनिया परिवार में पैदा हुआ था। सीमा के परिवार वालों ने धोखे से बुलाकर उसकी हत्या कर दी। इधर-उधर मारे-मारे फिर रहे अमित का कहना है कि देर-सबेर उसकी भी हत्या कर दी जायेगी। पुलिस-प्रशासन से उसे कोई भी मदद नहीं मिल रही है।

विगत 15 अगस्त को जब सारा देश आजादी का जश्न मना रहा था, कुशीनगर(उ.प्र) के देवीपुर गांव में अतिपिछड़ी जाति के एक गरीब परिवार की 15 वर्षीय लड़की की पीट-पीट कर हत्या की जा रही थी। आरोप यह था कि उसने एक अवैध बच्चे को जन्म देकर खेत में फेंक दिया था। मृत्यु के बाद पोस्टमार्टम रिपोर्ट से पता चला कि पंचायती बर्बरता की शिकार वह लड़की कभी गर्भवती हुई ही नहीं थी।

पिछड़े-गरीब कुशीनगर के दूसरे छोर पर शिक्षित-समृद्ध गुजरात की राजधानी अहमदाबाद में हिन्दुत्व के ठेकेदारों ने भारती बारोट को एक मुसलमान से प्रेम करने और विवाह करने के "गुनाह" में इतना प्रताड़ित किया कि उसने हिन्दू महासभा के दफ्तर में ही खुदकुशी कर डाली।

इस तरह की घटनाओं में लगातार बढ़ोत्तरी सिर्फ़ यही नहीं बताती कि जाति-व्यवस्था और धर्म के स्वयंभू ठेकेदारों की बर्बरता लगातार बढ़ती जा रही है। साथ ही, वह यह भी बताती है कि प्रबुद्ध और बहादुर युवाओं का एक हिस्सा अन्याय के विरुद्ध उठ खड़े होने के निहितार्थों को आज व्यापक अर्थों में जान-समझ रहा है और राजनीतिक व्यवस्था के साथ ही वह अन्यायी-बर्बर सामाजिक व्यवस्था और मूल्यों के विरुद्ध भी साहसिक विद्रोही की पहल कर रहा है तथा इसकी कीमत चुका रहा है।

बर्बर स्वेच्छाचारिता के सड़ांध से बजबजाते भारतीय समाज में प्रेम करने की आज़ादी के

(शेष पृष्ठ 33 पर)

चार दिवसीय जनजागरण अभियान के रूप में मनाया गया।

24 से 27 सितम्बर तक चले इस अभियान के तहत **'दिशा'** की टोली ने विभिन्न नारों से युक्त ऐप्रन पहने और तख्तियां लगाए हुए साइकिल रैलियां निकाली और शहर के विभिन्न कार्यालयों में नुक्कड़ नाटक **'हवाई गोले'** की प्रस्तुति की। नाटक के माध्यम से संसदीय सुअरबाड़े की असलियत का खुलासा किया गया।

27 सितम्बर को सुबह प्रेमचन्द पार्क से एक साइकिल रैली निकाली गयी जो भगतसिंह चौक पर पहुंचकर शहीदे आज़म की मूर्ति पर माल्यार्पण के बाद एक नुक्कड़ सभा में तब्दील हो गयी। सभा में वक्ताओं ने कहा कि जब सारे देश में आम आदमी के हालात लगातार बद से बदतर होते जा रहे हों, 30 करोड़ बेरोजगार सड़कों की खाक छान रहे हों, नौकरी मिलना तो दूर मिली हुई नौकरियां ही छीनी जा रही हों, शिक्षा से लेकर चिकित्सा तक सब कुछ बिकाऊ माल बनाया जा रहा हो तो ऐसे समय में बेहतर शिक्षा और बेहतर भविष्य के लिए छात्रों की लड़ाई कैम्पसों के भीतर सिमटी नहीं रह सकती। छात्र-नौजवान आबादी को समाज के व्यापक और बुनियादी सवालों से जूझना होगा। शाम को **'दिशा'** के कार्यकर्ताओं ने मशाल जुलूस भी निकाला। जो भगतसिंह चौक से गोलघर होते हुए टाउनहाल पर जाकर समाप्त हुआ। इसके बाद क्रान्तिकारी गीतों की प्रस्तुति भी की गयी। इस कार्यक्रम में **अरुण मौर्य, अरुण यादव, जनार्दन, शालिनी, समृद्धि, समीक्षा, विक्रम जायसवाल, आदेश** आदि ने भागीदारी की।

सूरजपुर (मऊ) 'नौजवान भारत सभा' की स्थानीय इकाई ने भगतसिंह के जन्मदिवस के अवसर पर 29 सितम्बर को सूरजपुर में शहीद पुस्तकालय के सामने एक सभा का आयोजन किया।

सभा के दौरान वक्ताओं ने कहा कि पिछले चौवन वर्षों के आज़ाद भारत में जहां देशी पूंजीपतियों की पूंजी में पांच सौ गुने से हजार गुने तक की बढ़ोत्तरी हुई है वहीं मेहनतकश बहुसंख्यक आम आबादी की बदहाली लगातार बढ़ती गयी है। विगत एक दशक के दौरान, जबसे उदारीकृत नयी अर्थव्यवस्था लागू हुई है, यह लूटतंत्र और ज्यादा बढ़ता गया है। हालात ये है कि विगत एक दशक के दौरान लगभग चार लाख छोटे-बड़े कारखाने बन्द हो चुके हैं और लगभग पांच करोड़ लोग सड़कों पर ढकेले जा चुके हैं।

शिक्षा-चिकित्सा जैसी मिली बुनियादी सहूलियतें भी अब छीनी जा रही हैं। गरीबी और तंगहाली से पूरे परिवार सहित आत्महत्याएं बढ़ती जा रही हैं। एक तरफ अनाज का विपुल भण्डार पड़ा है और सड़ रहा है दूसरी तरफ देश के कई हिस्सों में लोग भूख से मर रहे हैं, कुपोषण के शिकार हो रहे हैं। भगतसिंह ने ऐसे ही समाज के बारे में कहा था **'अगर कोई सरकार जनता को उसके बुनियादी सुविधाओं से वंचित रखती है तो उस देश के छात्रों-नौजवानों का यह दायित्व ही नहीं, आवश्यक कर्तव्य बन जाता है कि वे उस सरकार को पलट दें या फिर तबाह कर दें।'** वक्ताओं ने नौजवानों को आह्वान किया कि वे भगतसिंह के सपनों का समाज बनाने के लिए आगे आयें। यही आज वक्त की जरूरत है और यही शहीदे आज़म को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सभा को, **आदेश कुमार, कपिलदेव, के. एन.सिंह, नन्दलाल, भरत शर्मा, पारसनाथ सिंह, डा. अमरनाथ, अनुभवदास शास्त्री** आदि ने सम्बोधित किया। संचालन **दसवंत** ने किया।

सभा के प्रारम्भ में भगतसिंह के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। अन्त में **देहाती मज़दूर किसान यूनियन** व **नारी** सभा की संयुक्त टोली ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इस अवसर पर पुस्तक एवं पोस्टर प्रदर्शनी भी लगायी गयी थी।

साहसिक विद्रोह है!

(पृष्ठ 26 का शेष)

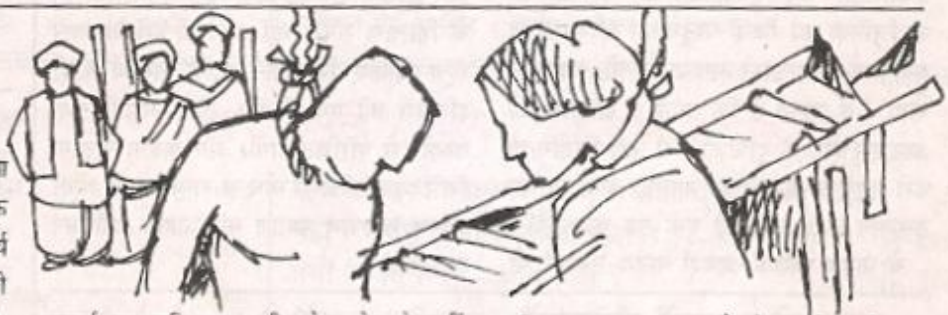

लिए युवाओं का संघर्ष वस्तुत: जाति-व्यवस्था और धार्मिक कट्टरपंथ के विरुद्ध भी एक संघर्ष है और यह एक अनिवार्य-अपरिहार्य संघर्ष है। प्रेम करने की आज़ादी जीने की आज़ादी है। यह जनवाद की वह पुरानी, बुनियादी लड़ाई है, जो अभी तक हमारे देश में जीती नहीं जा सकी है। भारतीय समाजवादी क्रान्ति के एजेण्डे पर जातिवाद-विरोध, धर्म के मामले में व्यक्तिगत आज़ादी और प्रेम के मामले में जाति-धर्म के बंधनों के विरोध का सवाल अहम स्थान रखता है। यह एक शौर्यपूर्ण और जुझारू सांस्कृतिक आन्दोलन का एजेण्डा है। इस एजेण्डे को हाथ में लिये बिना जनमुक्ति का प्रबल वेगवाही झंझावत नहीं खड़ा किया जा सकता। जाति-धर्म के बंधन के सम्पूर्ण, नाश की लड़ाई एक लम्बी लड़ाई है, जो राजनीतिक क्रान्ति सम्पन्न होने के बाद भी दीर्घकाल तक सतत् जारी रहेगी। लेकिन इस लड़ाई का यदि आज ही जोर-शोर से नहीं छेड़ा जायेगा तो सामाजिक-राजनीतिक क्रान्ति की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया ही नहीं जा सकेगा।

*

दमन की हर चेष्टा प्रतिरोध की लपटों को हवा देकर लहकाने-दहकाने का ही काम करती है। सैकड़ों विशालों और सोनुओं को फांसी चढ़ाकर भी युवाओं के दिलों से प्रेम करने की पवित्र मानवीय चाहत का खात्मा नहीं किया जा सकता, ठीक वैसे ही जैसे, अन्याय के विरुद्ध विद्रोह के जज्बे को नहीं दबाया जा सकता।

भारतीय समाज के अंधेरे में प्रेम करना यदि गुनाह माना जाता है तो इसके मानी यह है कि प्रेम एक साहसिक विद्रोह है। फांसी और गोली से प्रेम करना बंद नहीं किया जा सकता। बहादुर युवा फिर भी प्रेम करेंगे। जाति और धर्म के बंधनों को लात मारकर प्रेम करेंगे। यदि वे इंसाफपसन्द और स्वाभिमानी हैं, यदि वे सच्चे अर्थों में युवा हैं तो प्रेम करने के अधिकार के लिए वे जाति-धरम के ठेकेदार "पंच परमेश्वरों" की सामुदायिक बर्बरता को अवश्य ही चुनौती देंगे। प्रेम करने के लिए की गई हर बगावत जाति प्रथा और धार्मिक कट्टरता पर चोट करेगी और सामाजिक मुक्ति के लिए जनमानस को तैयार करने का काम करेगी।